फरीदाबाद
मजदूर समाचार

'मजदूर समाचार' की कुछ सामग्री अंग्रेजी में इन्टरनेट पर है। देखें–
< http://faridabad majdoorsamachar.blogspot.com >

डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन.आई.टी. फरीदाबाद – 121001

जीवन की लौ को सृजनात्मक तौर पर प्रचुर करने का एक माध्यम

नई सीरीज नम्बर 284 1/- फरवरी 2012

और बातचीत तथा आदान-प्रदान के लिये

साथियों-मित्रों की कुछ बातें प्रस्तुत हैं।

★ "मजदूरों ने फैक्ट्रियों पर कब्जे किये" कहने की बजाय यह कहना कि "मजदूरों ने फैक्ट्रियों पर से कम्पनियों के, सरकार के कब्जे हटाये" : 4 से 16 जून 2011 के दौरान मारुति सुजुकी मानेसर फैक्ट्री मजदूरों ने जो किया वह बहुत-ही महत्वपूर्ण है। फिर 7 अक्टूबर को मारुति सुजुकी, सुजुकी इन्जन, सुजुकी कास्टिंग, सुजुकी मोटरसाइकिल, सत्यम ऑटो, बजाज मोटर, इन्डयुरेन्स, हाईलैक्स, लुमैक्स, लुमैक्स डी. के., डिघानिया फैक्ट्रियों में मजदूरों ने जो किया वह तो और भी महत्वपूर्ण है। यह कोई जनवादी अधिकार अथवा संवैधानिक अधिकार की बात नहीं थी। यह कोई हड़ताल भी नहीं थी। मजदूर समाचार में हम ने इसे मजदूरों द्वारा फैक्ट्रियों पर कब्जा करना कहा है। जून और अक्टूबर 2011 में आई.एम. टी. मानेसर में मजदूरों ने जो किया उसे "मजदूरों द्वारा फैक्ट्रियों पर कब्जा" कहना भी उसके महत्व को कम करके आँकना है। और फिर, "कब्जा करना" तो दिशा ही गड़बड़ा देता है। ऊँच-नीच, अमीर-गरीब, ताकतवर-कमजोर वाली समाज व्यवस्थायें टिकी ही कब्जों पर होती हैं। आज कम्पनियाँ और सरकारें पृथ्वी पर तो हर चीज पर कब्जे करने में जुटी ही हैं, अन्तरिक्ष में भी कब्जों के लिये इनमें मारामारी मची है। हम सब चीजें साँझा करना चाहते हैं, हम हर चीज से कब्जे हटाना चाहते हैं। गाय पर कब्जा, मनुष्य के तन पर कब्जा, जमीन पर कब्जा, मकान पर कब्जा, जल पर कब्जा, हवा पर – मानव मन पर कब्जे की आतुरता...... कब्जा हवस हमें विनाश के कगार पर ले आई है। ऐसे में आई.एम.टी. मानेसर में मजदूरों ने जो किया उसे "कब्जा करना" कहना उसके सार को नकारना और उसकी सम्भावनाओं को कुचलने के समान है। मारुति सुजुकी मजदूरों की बातचीत में तो यह खुल कर आया है कि 7 से 14 अक्टूबर के दौरान जब फैक्ट्री पर कम्पनी और सरकार का नियन्त्रण-कब्जा नहीं रहा था तब उन्होंने जीवन के ऐसे आनन्द अनुभव किये थे जिनकी सामान्य तौर पर कल्पना भी नहीं की जा सकती। इसलिये आई.एम.टी. मानेसर मजदूरों ने जो किया उसका महत्व "कब्जे हटाओ" की श्रृंखलाओं का प्रस्थान-बिन्दु बनने में है। इस सन्दर्भ में अमरीका में आरम्भ हुआ "ऑक्युपाई (कब्जा)" आन्दोलन वास्तव में कम्पनियों और सरकारों के कब्जे हटाने का अभियान है और इसी अर्थ में महत्वपूर्ण है।

★ घाव को कुरेदना, घाव को सहलाना, घाव की चर्चा करना ऐसे चक्रव्यूह का निर्माण करना है जिसमें से कोई मसीहा ही निकाल सकता है : आज संसार में पीड़ा बहुत है। दुखों की भरमार है। ढेरों में घाव हैं। और, पीड़ा-दुख-घाव भी कारोबार बन गये हैं। कारोबारों की इस उपज का स्वयं कारोबार बन जाना बिचौलिया संस्कृति का एक स्तम्भ है। हमारे दुख-दर्द दूर करने में जुटी नायक-नायिकाओं की सेना हमारे दुख-दर्द को बढाने के पुख्ता इन्तजाम में जुटी है। भलाई की आड़ में बुरा करना बिचौलिया संस्कृति का सार है। रोना-धोना हमें बिचौलियों की शरण में ले जाता है। लेकिन, रोने-धोने के अलावा हम बहुत-कुछ करते हैं पर उसकी चर्चा हम कम ही करते हैं। प्रतिनिधि-नेता के किस्से ही ज्यादा चर्चा में रहते हैं। अकेले-अकेले और मिलजुल कर जो हम करते हैं उन अनुभवों को साँझा करना बिचौलियों के चक्रव्यूहों को भेदना है, पीड़ा के पहाड़ों को हटाना लिये है।

★ आरम्भ कहाँ से करें ? कठिनाईयों-परेशानियों से या फिर आनन्ददायक क्रियाओं से ? कहते हैं कि दुनिया सिखाती है। जबकि, महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि हम दुनिया को पढते कैसे हैं। यह हमारा दुनिया को पढना होता है जो हमारी दिशा, क्षितिज, लक्ष्य तय करता है। और, दुनिया को यह पढना किन क्षमताओं को विकसित करना है यह निर्धारित करता है। कौन-सी प्रवृतियों को, कौन-से आवेगों को वजन देना है, जीवन्त करना है, गति प्रदान करनी है यह हम तय करते हैं। हमारा दुनिया को सही अथवा गलत पढना इस बात से तय होता है कि वास्तविकता में मौजूद सकारात्मक सम्भावनाओं को मूर्त रूप देने की दिशा में हम बढ पाते हैं या फिर हम नकारात्मकता तथा नकारात्मक सम्भावनाओं को पुष्ट करते हैं।

पिछले अंक में मानसिक रोगों के आँकड़ों ने प्रगति और विकास की विनाशकारी प्रतिक्रिया को हावी कर दिया। उल्लास के उभर सकने वाली, जीवन की अनगिनत अभिव्यक्तियों वाली नई भाषा-नये आवेगों-नये जोड़ों के लिये आमन्त्रण दब गया, बिखर गया, उलट गया। हुआ यह कि उल्लास अपनी स्वतन्त्र क्रियाशीलता की वास्तविकता की बजाय प्रगति और विकास की विनाशलीला के विरोध के तौर पर प्रकट हुआ। जीवन का उल्लास प्रतिक्रिया मात्र बन गया।

★ हिमालयी आकार लेते पीड़ा के पहाड़ों को अनदेखा नहीं करना चाहिये। पिछले अंक में मानसिक रोगों के आँकड़े आज वास्तव में प्रत्येक को जो पीड़ा भोगनी पड़ रही है उसका एक बहुत-ही छोटा अंश-मात्र दर्शाते हैं। बेशक प्रगति और विकास के ताण्डव में जीवन की क्रियाशीलता अति महत्व की है। विनाशलीला के दौरान उल्लास के उभार आशा की किरणें हैं। जीवन द्वारा स्वतन्त्र तौर पर की जा रही रचनायें नई समाज रचना का आधार हैं। प्रगति और विकास द्वारा किये जा रहे विनाश के विरोध बेशक प्रतिक्रिया हैं पर इनके महत्व को कम करके नहीं देखना चाहिये। यह विरोध हर स्थापित प्रस्थापना पर प्रश्न-चिन्ह लगा सकते हैं और यह जीवन की क्रियाशीलता-रचनात्मकता को उथल-पुथल भरा माहौल प्रदान करते हैं। हाँ, हम विरोध तक ही सीमित रहे तो बर्बादी हमारे इन्तजार में है।

★ हर महीने मजदूर समाचार ओखला, उद्योग विहार, मानेसर, फरीदाबाद में मजदूरों के बीच पहुँचने के दौरान अनेकों लोगों के साथ दो-तीन मिनट की चर्चायें होती हैं। इन बातचीतों में बार-बार एक दिक्कत उभर कर आती है। यह एक महत्वपूर्ण दिक्कत लगती है। बातों में कम्पलेन्ट-शिकायतों की भरमार रहती है। तनखा कम, वेतन में देरी, जबरन ओवर टाइम, दुगुनी दर की बजाय सिंगल रेट से भुगतान, गाली, पानी खराब, शौचालय गन्दे, पानी-पेशाब के लिये टोकन, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं, एक्सीडेन्ट रिपोर्ट नहीं भरना, स्थाई नहीं करते, कैजुअल रखते हैं, ठेकेदारों के जरिये रखते हैं, फण्ड के पैसे नहीं मिलते, ई.एस.आई. कार्ड नहीं, छोड़ने पर काम किये दिनों के पैसे नहीं..... कम्पनियों की, सरकारों की शिकायतों वाली बातें अवश्य कीजिये पर चर्चाओं का इन दायरों में जकड़े रहना हम सब के लिये एक बाधा है। अकेले-अकेले और मिलजुल कर हम कितना-कुछ करते हैं। इन अनुभवों के बारे में बताइये। क्या-क्या करना ठीक रहा और क्या-क्या करना गलत रहा इसके बारे में बताइये। ऐसा क्यों हुआ इसके बारे में अपने विचार बताइये। कैसे करना अच्छा रहा और कैसे करना परेशानी लिये था, ... अपनी इन बातों को फैलाना, इनका आदान-प्रदान बढाना बनता है। आपस में जब हम दो-चार घण्टे बातचीत करते हैं तब अपनी स्वयं की, सहकर्मियों की, साथियों की, पड़ोसियों की, दुनिया की सकारात्मक झलक भी उभर कर आती है। फुर्सत में होती इन चर्चाओं में हम कई प्रकार की

(बाकी पेज दो पर)

फैक्ट्रियों में कानूनों की एक झलक

ओखला में काम करता मजदूर : "दिल्ली सरकार ने 1 जनवरी को विज्ञापन में मजदूरों को एक फोन नम्बर, 12789 दिया था। इस नम्बर पर डायल करने पर यही उत्तर मिलता है कि यह नम्बर उपलब्ध नहीं है।"

इण्डो ऑटोटेक मजदूर : "प्लॉट 338 सैक्टर-24 फरीदाबाद स्थित फैक्ट्री में 1000 के करीब मजदूर **होण्डा, सुजुकी, यामाहा** के हिस्से-पुर्जे बनाते हैं। पावर प्रेस विभाग में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं और यहाँ हाथ बहुत कटते हैं। पावर प्रेस में श्री कृष्ण इन्टरप्राइजेज नाम के ठेकेदार के जरिये मजदूर रखे हैं और ई.एस.आई. व पी.एफ. सब की हैं। वैल्डिंग विभाग में काम करते 400 मजदूरों में 50 की ही ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं – पंच कार्ड पर नाम नहीं, फोटो नहीं, मात्र एक सँख्या। होण्डा का कार्य करते 50 वैल्डरों की 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। बाकी 350 वैल्डरों की रोज 12, 14, 15 घण्टे की एक शिफ्ट है। काम का बहुत दबाव रहता है, खड़े-खड़े काम करना पड़ता है, डण्डे से हाँके जाने जैसी बात है। गाली देते हैं और 12 घण्टे काम के बाद जबरन रोकते हैं। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से....... सुबह 7 से रात 1 तक काम करवाते थे तब रात 8 बजे एक घण्टे का भोजन अवकाश देते थे और ओवर टाइम के 13 घण्टे बनाते थे पर मई 2011 से इसे बदल कर जितने घण्टे अतिरिक्त काम किया उतने ही घण्टे को ओवर टाइम कहते हैं। फैक्ट्री में कैन्टीन नहीं है, भोजन करने के लिये स्थान नहीं है, मशीन की बगल में नीचे बैठ कर खाना खाते हैं। इण्डो ऑटोटेक कम्पनी की आई एम टी मानेसर, भिवाड़ी, पुणे, कर्नाटक में फैक्ट्रियाँ हैं और यहाँ सैक्टर-24 स्थित दूसरी फैक्ट्री में **जे सी बी** का काम होता है।"

अस्ट्रा फैशन्स श्रमिक : "प्लॉट 69 सैक्टर-4 आई.एम.टी. मानेसर स्थित फैक्ट्री में 150 मजदूरों की सुबह 9 से रात 8 की शिफ्ट है और महीने में 20 बार से ज्यादा रात 1 बजे तक रोकते हैं। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। तनखा हर महीने देरी से.......12 जनवरी को फिनिशिंग विभाग के मजदूरों ने साहब से दिसम्बर की तनखा माँगी...... कम्पनी ने कार में गुण्डे बुलाये। मजदूरों को दिसम्बर की तनखा 21 जनवरी को दी और स्टाफ को आज, 24 जनवरी को देने की बात है। मजदूरों की तनखा से ई.एस.आई. व पी.एफ. की राशि काटते हैं पर ई.एस.आई. कार्ड नहीं देते और छोड़ने पर मजदूर को फण्ड के पैसे नहीं मिलते। स्टाफ की तनखा से सिर्फ ई.एस.आई. की राशि काटते हैं, पी.एफ. की नहीं।"

सुपर इलेक्ट्रो फिल्म्स लिमिटेड कामगार: "प्लॉट 3 ए सैक्टर-4 फरीदाबाद स्थित फैक्ट्री में सुबह 8 से रात 8½ और रात 8 से अगली सुबह 8½ की दो शिफ्ट हैं। रविवार को शिफ्ट बदलती है तब दिन वालों की लगातार 24 घण्टे ड्युटी। कम्पनी 10½ घण्टे कार्य को आठ घण्टे की ड्युटी करार देती है और 12½ घण्टे कार्य में दो घण्टे को ओवर टाइम कहती है। हैल्परों को 10½ घण्टे के 175 रुपये देते हैं। जिन घण्टों को ओवर टाइम कहते हैं उनका भुगतान भी सिंगल रेट से। ई.एस.आई. व पी.एफ. 50 मजदूरों में 10 की ही हैं।"

सरिता हाण्डा एक्सपोर्ट हाउस वरकर : "प्लॉट 29 सैक्टर-4 आई.एम.टी. मानेसर स्थित फैक्ट्री में 5000 से ज्यादा मजदूर होम फिनिशिंग – तकिया कवर आदि तैयार करते हैं। कम्प्युटर इम्ब्राइड्री विभाग में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं और बाकी जगह रोज सुबह 8½ से रात 8 की शिफ्ट है। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। इम्ब्राइड्री विभाग में 12 घण्टे में ढाई लाख टाँके लगाना...... यहाँ हैल्पर को 12 घण्टे रोज पर 26 दिन के 6300 और ऑपरेटर को 8600 रुपये। कैन्टीन थी पर 1 जनवरी से बन्द कर दी।"

डी.एस. बुहीन मजदूर: "प्लॉट 88 सैक्टर-24 फरीदाबाद स्थित फैक्ट्री में 400 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में **मारुति सुजुकी, होण्डा, टाटा नैनो** के हिस्से-पुर्जे बनाते हैं। रविवार को भी 12-12 घण्टे काम। दो-तीन महीने में शिफ्ट बदलते हैं उस रविवार को दिन में ही 12 घण्टे काम। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। मात्र 35 स्थाई मजदूर हैं। पाँच ठेकेदारों के जरिये रखे 350 से ज्यादा मजदूरों में 150 की ही ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं। फैक्ट्री में 30 पावर प्रेस हैं। 1-2-3-4 उँगलियाँ कटती हैं, अँगूठे कटते हैं। एक्सीडेन्ट बहुत होते हैं। एक वर्ष में 150 से ज्यादा के हाथ कटते हैं, कभी-कभी एक दिन में तीन-तीन मजदूरों के हाथ कट जाते हैं। एक्सीडेन्ट रिपोर्ट नहीं भरते। ई.एस.आई. नहीं ले जाते। प्रायवेट में कहीं ले जाते हैं और फिर निकाल देते हैं। प्रेस शॉप में रोज नये चेहरे आते हैं। ठेकेदारों के जरिये रखे हैल्परों की तनखा 3600-3800 रुपये। गड़बड़ी कर हर महीने 2-3 दिहाड़ी खा भी जाते हैं। सुपरवाइजर, मैनेजर सब गाली देते हैं। पीने का पानी खराब। शौचालय बहुत-ही गन्दे।"

ट्रिकोलाइट श्रमिक : "प्लॉट 5 सैक्टर-6 आई.एम.टी. मानेसर स्थित फैक्ट्री में फैब्रिकेशन प्लान्ट में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं और दूसरे प्लान्ट में एक शिफ्ट, सुबह 9 से रात 8, 10½, 12 बजे तक। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। दो सौ मजदूरों में एक भी स्थाई मजदूर नहीं है, सब कैजुअल वरकर हैं। फैक्ट्री में बिजली के पैनल बनते हैं। प्रोडक्शन हैड को बदले तीन वर्ष हुये हैं। वार्षिक वेतन वृद्धि 2000-3000 रुपये थी उसे 5 प्रतिशत कर 250-500 रुपये कर दिया। निर्धारित लक्ष्य हर वर्ष बढाते हैं, इस वर्ष पहले तीन महीनों में 80 करोड़ रुपये का टारगेट दिया है – इन तीन महीनों में कोई छुट्टी नहीं, कोई गेट पास नहीं, चारों रविवार काम। कैन्टीन थी, दो वर्ष पहले बन्द कर दी – बोले थे चालू करेंगे, पर नहीं की। पहले वर्ष में वर्दी देते थे, अब दो वर्ष में वर्दी देने लगे हैं। पीने के लिये बोतल वाला पानी होता था, दो वर्ष से बन्द कर दिया है।"

ऑटो डिकोर वरकर : "प्लॉट 91 सैक्टर-3 आई.एम.टी. मानेसर स्थित फैक्ट्री में 300 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में **मारुति सुजुकी, होण्डा, जे एन एस, प्रिकॉल, कॉन्टिनेन्टल** आदि के प्लास्टिक के हिस्से-पुर्जे बनाते हैं। बीस महिला मजदूरों की दिन में दस घण्टे की ड्युटी। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से।"

शाही एक्सपोर्ट हाउस कामगार : "प्लॉट 1 सैक्टर-28 फरीदाबाद स्थित फैक्ट्री में आठ-दस हजार मजदूर काम करते हैं जिनमें 45 प्रतिशत महिला और 55 प्रतिशत पुरुष हैं। कपड़ों की सिलाई की 47 लाइनें हैं और एक लाइन में 25 से ज्यादा मशीनें हैं। सिलाई में एक शिफ्ट है। सैम्पलिंग विभाग में 8½-8½ घण्टे की दो शिफ्ट हैं। कम्प्युटर इम्ब्राइड्री विभाग में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। कटिंग विभाग में सुबह की शिफ्ट के बाद रात 7 से रात 3½ बजे की शिफ्ट भी है। कम्पनी की नोएडा, सूरजपुर, ओखला फैक्ट्रियों का भी कटिंग कार्य यहाँ होता है। कटिंग और फिनिशिंग विभागों में 2000 से ज्यादा मजदूरों को कम्पनी ने ठेकेदारों के जरिये रखा है। इन मजदूरों की ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं, ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से, और जाँच वाले आते हैं तब इन मजदूरों को कम्पनी फैक्ट्री के बाहर निकाल देती है। स्थाई मजदूरों की तनखायें भी कम हैं – 15 वर्ष से काम कर रहों को सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन। स्थाई मजदूरों को ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर से करते हैं पर पे-स्लिप में दो-चार घण्टे ही दिखाते हैं। साहब धमकाते हैं, गाली देते हैं – सुपरवाइजरों को तो मैनेजर पीट भी देते हैं। मजदूरों और मैनेजमेन्ट के बीच लगातार खटपट चलती रहती है, हम राहें तलाशते रहते हैं। सन् 2000 में हमारे द्वारा कम्पनी का विरोध करने में कम्प्युटर इम्ब्राइड्री विभाग की महिला मजदूर अगली कतारों में थी। सन् 2009 में चक्के जाम करने में सैम्पलिंग विभाग मजदूर आगे थे।"

सेज मैटल मजदूर : "प्लॉट 123 सैक्टर-24 फरीदाबाद स्थित फैक्ट्री में 11-11 घण्टे की दो शिफ्टों में 200 मजदूर हैं। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। फैक्ट्री में 30 स्थाई मजदूर और दो ठेकेदारों के जरिये रखे 170 मजदूर हैं। गर्म काम है, जलते बहुत हैं – एक्सीडेन्ट रिपोर्ट भर कर ई.एस.आई. भेज देते हैं। निर्धारित उत्पादन ज्यादा है, सिर पर खड़े रहते हैं। स्थाई मजदूरों को 20 प्रतिशत बोनस पर ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों को बोनस नहीं देते।" **ओरियन्ट क्राफ्ट श्रमिक :** "प्लॉट 15 सैक्टर-5 आई.एम.टी. मानेसर स्थित फैक्ट्री में ओवर टाइम में घपला करते हैं, 50-60 घण्टों में से 10-15 घण्टे उड़ा देते हैं। प्रोडक्शन मैनेजर गाली देता है।....."

और बातचीत...(पेज एक का शेष)

(पेज एक का शेष)

सोच-विचार से गुजरते हैं। कई आवेग व्यक्त होते हैं। मजेदार क्षणों को नया जीवन मिलता है। आराम से बातचीत के लिये तो समय निकालिये ही, दो-तीन मिनट वाली बातों में भी अपनी पहलकदमियों के बारे में बतायें।■

सीनियर फ्लैक्सोनिक्स..... (पेज चार का शेष)

अधिकारी बोले कि 27 स्थाई मजदूरों को छोड़ कर बाकी सब को ड्युटी पर ले लेंगे। हम ने गलती पूछी, नहीं बताई और तब 11 की तारीख दे दी। कम्पनी 8 जनवरी की रात से नये मजदूरों को फैक्ट्री में ले जाने लगी थी। बीस दिन में उनकी सँख्या 100-125 हो गई है और वे 24 घण्टे फैक्ट्री के अन्दर रहते हैं। स्टाफ के 45-50 लोग जो कि इंजिनियर हैं, वे सब उत्पादन कार्य में कम्पनी ने लगा दिये हैं। फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में काम, गाड़ी तथा गार्ड-बाउन्सर स्टाफ को घर से लाते हैं और घर तक छोड़ कर आते हैं। **लक्की इन्टरप्राइजेज, गुड़गाँव और अजय इंजिनियरिंग,** फरीदाबाद के अलावा कम्पनी दिल्ली में भी माल बनवा रही है। आई.एम.टी. फैक्ट्री में अब सिर्फ असेम्बली होती है। श्रम विभाग में 11 जनवरी की तारीख पर कम्पनी बोली कि 17 स्थाई मजदूरों को छोड़ कर बाकी सब को ड्युटी पर ले लेगी। फिर 13 की तारीख पर बोले कि 12 को छोड़ कर.... 16 जनवरी की तारीख पर 4 को छोड़ कर.... 18 की तारीख पर बोले 4 को बर्खास्त कर रहे हैं..... 19 की तारीख पर बोले कि इन 4 को निलम्बित कर रहे हैं.... 21 को....23 को यही बोले। उप श्रम आयुक्त के कार्यालय पर 17 जनवरी को मजदूरों का प्रदर्शन। घरों पर पत्र भेज रहे हैं कि या तो अन्दर आ कर काम करो अन्यथा हिसाब घर पर भेज देंगे – इससे घरवाले परेशान होते हैं। श्रम अधिकारी कहता है कि बड़ी मछली हमेशा छोटी मछली को खाती है। गणतन्त्र दिवस के बाद 27 जनवरी की तारीख पर कम्पनी नहीं पहुँची। फिर 30 जनवरी की तारीख पर उप श्रम आयुक्त बोला कि 4 स्थाइ मजदूरों को छोड़ कर ड्युटी जाओ और कम्पनी बोली कि 40 अस्थाई को यहाँ नहीं लेंगे, उन्हें शिफ्ट करेंगे। फिर 3 फरवरी की तारीख पर कम्पनी नहीं पहुँची और फोन पर समझौते की बात की। फिर 8 फरवरी की तारीख पर कम्पनी बोली कि अस्थाई में 50 को ही यहाँ लेंगे और बाकी को दूसरी जगह भेजेंगे क्योंकि नये मजदूर ज्यादा काम कर रहे हैं। उप श्रम आयुक्त ने नई तारीख नहीं दी और आपस में बैठ कर समझौता करने को कहा। श्रम विभाग में 16 जनवरी को शिकायत करने के बाद कम्पनी ने दिसम्बर की तनखा 18-19 जनवरी को दी और खाते में कुछ गड़बड़ है कह कर दो स्थाई मजदूरों को दी ही नहीं। यूनियनों ने 8 फरवरी को फैक्ट्री गेट पर मीटिंग की, दस फैक्ट्रियों के 5-6 हजार मजदूर एकत्र हुये। आर्थिक और अन्य सहयोग के आश्वासन। कमला नेहरू पार्क में 15 फरवरी को यूनियनों की समिति सीनियर फ्लैक्सोनिक्स मजदूरों को समर्थन के बारे में विचार-विमर्श करेगी।"

और, एक विचार : जकड़ ढीली करने में जुटे मजदूरों पर जकड़ बनाये रखने के लिये शर्तों पर हस्ताक्षर को फैक्ट्री में प्रवेश के लिये अनिवार्य बनाना कम्पनियों की एक जाँची-परखी शतरंज की चाल है। शर्तों पर दस्तखत को नेता लोग हाथ कटवाना बताते हैं हालाँकि तथ्य यह है कि नौकरी लगते समय शायद ही कोई देखती-देखता है कि क्या-क्या शर्तें हैं। लीडर लोग शर्तों पर हस्ताक्षर की अनिवार्यता को गैर-कानूनी तालाबन्दी कहते हैं। आमतौर पर मजदूर शर्तों पर दस्तखत नहीं करते और फैक्ट्री के बाहर एकत्र होते हैं। मैनेजमेन्टें इसे मजदूरों द्वारा गैर-कानूनी हड़ताल घोषित करती हैं। एक-दो-तीन महीने-....-एक-डेढ वर्ष तक फैक्ट्री से बाहर बैठाये मजदूर कम्पनी की आवश्यकता अनुसार कमजोर पड़ जाते हैं और कम्पनी व यूनियन के बीच समझौता हो जाता है। गैर-कानूनी तालाबन्दी थी अथवा गैर-कानूनी हड़ताल थी की गुत्थी आमतौर पर गुत्थी ही बनी रहती है। **मारुति सुजुकी मानेसर** के मजदूरों का कम्पनियों के शर्तों पर हस्ताक्षर वाले इस चक्रव्यूह में 29 अगस्त 2011 को फँसना और फिर इसे काट कर बाहर निकलना के मुख्य कारण यह लगते हैं: 1. मजदूरों द्वारा सुनना सब की पर करना अपने मन अनुसार; 2. स्थाई मजदूरों, ट्रेनी, अप्रेन्टिसों, ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों के बीच बढते तालमेल; 3. बार-बार उकसाने के बावजूद मजदूर उकसावे में नहीं आये, प्रतिक्रिया देने वाले बनने की बजाय मजदूर क्रिया के वाहक बने और कम्पनी तथा सरकार को प्रतिक्रिया देने वालों की स्थिति में धकेला; 4. मजदूरों द्वारा अनुभव के बाद शर्तों और समझौतों को कागज के टुकड़ों के तौर पर लेना – 30 सितम्बर के समझौते के अनुसार शर्तों पर हस्ताक्षर कर 3 अक्टूबर को मजदूर फैक्ट्री के अन्दर गये और 7 अक्टूबर को फैक्ट्री पर से कम्पनी का कब्जा हटाया; 5. मारुति सुजुकी मजदूरों के अन्य फैक्ट्रियों के मजदूरों, छात्रों आदि के साथ बढते तालमेल – 7 अक्टूबर को आई.एम.टी. मानेसर में मजदूरों ने 11 फैक्ट्रियों पर से कम्पनियों के कब्जे हटाये; 6. ऐसे घनिष्ठ तालमेलों को आई.एम.टी. और गुड़गाँव, दिल्ली, फरीदाबाद की दिशाओं में फैलाने की बजाय इन्हें सुजुकी समूह की 4 फैक्ट्रियों तक सीमित करना ठहरना लिये था। यह ठहराव था जिससे मारुति सुजुकी और अन्य कम्पनियों तथा केन्द्र व राज्य सरकार की साँस में साँस आई। और, 6 महीने में मारुति सुजुकी मानेसर फैक्ट्री में तीसरा समझौता हुआ। शर्तों के जाल में फँस कर छटपटाने की श्रृँखला में एक कड़ी बनने की बजाय मारुति सुजुकी मजदूरों ने इसमें दरार डाली है। बाहर कर दिये जाने-बाहर हो जाने के बाद फैक्ट्री गेट पर बैठना, श्रम विभाग में तारीखें और महीना-बीस दिन में प्रदर्शन-सभा **जी के एन ड्राइवलाइन, सेन्डेन विकास, रीको ऑटो, डेन्सो, विवा ग्लोबल** के मजदूरों के लिये दुखदायी परिणाम ही लिये थी। इसलिये सीनियर फ्लैक्सोनिक्स के हों चाहे अन्य किसी फैक्ट्री के मजदूर, बाहर कर दिये जाने-बाहर होने पर आसपास के मजदूरों के साथ तालमेलों को बढाने में जुट जाना बनता है। फैक्ट्री के बाहर होते हैं तब तालमेलों के लिये समय भी खूब रहता है और ऊर्जा की तो भरमार रहती है। मजदूरों के बीच तालमेलों का बढना हर समस्या का समाधान तो लिये ही है, यह नई समाज रचना के पथ पर बढना भी है। जबकि, गेट पर बैठना तथा जब-तब वाले सभा-प्रदर्शन समय काटने के लिये ताश खेलना और कमजोर होते जाना लिये है।

मारुति सुजुकी डायरी..
(पेज चार का शेष)

बन्दों का उपस्थिति भत्ता कट ही जाता था – एक दिन की अनुपस्थिति पर 1950 में से 975 रुपये काटते हैं। स्थाई मजदूरों को 3 महीने में ऐसी 4 छुट्टी और ट्रेनी को 3।

*अब भी सुबह 7 की शिफ्ट में 6.45 पर और 3.45 वाली बी-शिफ्ट में 3.30 पर उपस्थित होना पड़ता है अन्यथा आधे दिन की अनुपस्थिति लगा देते हैं। भोजन अवकाश: थोड़ा पहले करने अथवा 5 मिनट देरी से लौटने पर भी आधे दिन की अनुपस्थिति लगा देते हैं। अब भी बीमार होने पर पहले की तरह दवा ले कर तुरन्त काम पर लगो। पर हाँ, अब बन्दा दवा लाने जा सकता है जबकि पहले तो सुपरवाइजर दवा ले कर आता था।

*फैक्ट्री को कम्पनी के कब्जे से छुड़ाया उस दौरान ए-प्लान्ट ही कार्यरत था। इधर बी-प्लान्ट चालू हो गया है। बी-प्लान्ट में अधिकतर मजदूर नये हैं। ए-प्लान्ट की तुलना में बी-प्लान्ट में मजदूरों पर काम का बोझ ज्यादा है। ए-प्लान्ट में एम एक्स विभाग में 76 मजदूर हैं और बी-प्लान्ट में 51 ही। अब ए-प्लान्ट में रिलीवर हैं जबकि बी-प्लान्ट में रिलीवर नहीं हैं। वैसे, ए और बी प्लान्टों में एम एक्स विभाग के 127 मजदूरों में एक भी स्थाई मजदूर नहीं है, सब वरकर ठेकेदारों के जरिये रखे गये हैं। जहाँ 8 मजदूर चाहियें वहाँ 4 हैं और जिस दिन एक छुट्टी कर लेता है उस रोज तो भोजन भी मुश्किल से। लाइन रुकनी नहीं चाहिये ! हाँ, पहले जहाँ ए कहते थे वहाँ अब बेटा कहते हैं पर अब भी धमकाते रहते हैं। दो कैन्टीन बनने से परेशानी कम नहीं हुई है क्योंकि बी-प्लान्ट चालू होने से मजदूरों की सँख्या बढ गई है।

*ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूर कुछ न कुछ करते ही रहते हैं। नये यूनियन लीडर हमें 4 फरवरी तक रुकने को कहते, तब तक यूनियन का पंजीकरण हो जायेगा। अब वे कह रहे हैं कि 24 फरवरी तक इन्तजार करो, तब तक यूनियन का पंजीकरण हो जायेगा।

*मारुति सुजुकी परिसर में **बेलसोनिका, एफ एम आई, एनर्जी, कृष्णा मारुति, एस के एच मैटल** आदि फैक्ट्रियों में कम्पनी का काम होता है। बेलसोनिका में दो ठेकेदारों के जरिये रखे 600 मजदूर और 40-45 ट्रेनी 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में शीट मैटल से छोटे हिस्से-पुर्जे बनाते हैं। रविवार को भी काम। जबरन रोकते हैं, महीने में 150-200 घण्टे ओवर टाइम और भुगतान मात्र 24 रुपये प्रति घण्टा। तीन वर्ष तक ट्रेनी रखने के बाद कम्पनी स्थाई मजदूर नहीं बनाती बल्कि सुपरवाइजर बना देती है। और, वर्ष-भर बाद सुपरवाइजर को नौकरी से निकाल देती है।

महीने में एक बार छापते हैं, 10,000 प्रतियाँ निशुल्क बाँटने का प्रयास करते हैं। मजदूर समाचार में आपको कोई बात गलत लगे तो हमें अवश्य बतायें। अन्यथा भी, चर्चाओं के लिए समय निकालें।

मारुति सुजुकी मानेसर डायरी (6)

***यही तो करना बनता है :** ठेकेदार के जरिये रखा गया मारुति सुजुकी मजदूर 13 जनवरी को बी-शिफ्ट में ड्युटी पर था जब **अलाइड निप्पोन** के एक मजदूर ने फोन पर बताया कि फैक्ट्री में लगी आग से एक मजदूर जल गया है। कम्पनी ने उसे अलियर में सपना नर्सिंग होम में भर्ती किया है और डॉक्टर से कहा है कि शाम को उसकी छुट्टी कर देना। दोनों पैर जाँघ से नीचे तक जले हैं. .... मारुति सुजुकी मजदूर ने अलाइड निप्पोन मजदूर से जले मजदूर को नर्सिंग होम में ही रखने को कहा। शनिवार, 14 जनवरी को सुबह मारुति सुजुकी में ठेकेदारों के जरिये रखे 10-15 मजदूर नर्सिंग होम गये। डॉक्टर ने जले मजदूर की छुट्टी करने की बात की तो कहा कि इलाज करो, कम्पनी अगर पैसे नहीं देगी तो हम देंगे। जले मजदूर को देखने कम्पनी से शनिवार व रविवार को कोई नहीं आया – साथी मजदूर अवश्य आते रहे। रविवार को साँय अलाइड निप्पोन के प्रोडक्शन मैनेजर को फोन किया तो साहब सफेद झूठ बोला कि उसे पता ही नहीं है कि कोई मजदूर जला है। अलाइड निप्पोन के जले मजदूर से मिलने गये मारुति सुजुकी के मजदूरों से सोमवार को सुबह डॉक्टर बोला कि पैसे दो नहीं तो ई.एस.आई. भेजेंगे। साथियों को फोन किये और आधे घण्टे में मारुति सुजुकी में प्रेस शॉप, असेम्बली, पेन्ट शॉप, वैल्ड शॉप विभागों के तथा सुजुकी पावरट्रेन के अलियर व ढाणा में रह रहे ठेकेदारों के जरिये रखे 70-80 मजदूर नर्सिंग होम पर एकत्र हो गये। वहाँ से अलाइड निप्पोन फैक्ट्री पहुँचे। फैक्ट्री मैनेजर से मिलने की बात की। साहब ने जले हुये मजदूर के बारे में कोई भी बात करने से इनकार कर दिया। मजदूरों ने यह भी कहा कि डरने की आवश्यकता नहीं है, आप गेट के दूसरी तरफ से ही बात करना, पर साहब नहीं माने। मारुति सुजुकी और सुजुकी पावरट्रेन में ठेकेदारों के जरिये रखे 70-80 मजदूरों को अलाइड निप्पोन गेट पर आधा घण्टा हो गया तब जले मजदूर को भर्ती करने वाली ठेकेदार कम्पनी का सुपरवाइजर आया। बातचीत में तय हुआ कि नर्सिंग होम का खर्चा और उपचार के दौरान बैठे दिनों के पैसे मजदूर को दिये जायेंगे तथा उसके घरवालों को फोन करके बुलाया जायेगा। सोमवार दोपहर को जले मजदूर को आई.एम.टी. में सैक्टर-3 स्थित ई.एस.आई. अस्पताल ले गये। आपातकाल में भर्ती कर लिया और ई.एस.आई. कार्ड माँगा – नहीं था। सुपरवाइजर ने दो घण्टे का समय डॉक्टर से माँगा और 12.12.2010 से काम कर रहे मजदूर का ई.एस.आई. कार्ड 16.1.2012 को बनवाया गया। एक्सीडेन्ट रिपोर्ट भरी। जले मजदूर के पिता गाँव से आ गये हैं। आज 24 जनवरी तक वह ई.एस.आई. अस्पताल में भर्ती है। अलाइड निप्पोन फैक्ट्री में जला मजदूर दुर्गेश बास गाँव में किराये पर रहता है। मारुति सुजुकी और सुजुकी पावरट्रेन के इस सन्दर्भ में कदम उठाने वाले मजदूर अलियर तथा ढाणा में किराये पर रहते हैं और उनमें से किसी का भी दुर्गेश से कोई परिचय नहीं था। छह महीने में दो बार फैक्ट्री पर से कम्पनी का कब्जा हटाने ने मारुति सुजुकी मजदूरों में नई भावनाओं और विचारों को उभारा है। ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों को ड्युटी पर रखवाने के लिये स्थाई मजदूरों तथा टेक्निकल ट्रेनियों ने 7 से 14 अक्टूबर तक फैक्ट्री पर से कम्पनी का कब्जा हटाया और ....और साथ में आई.एम.टी. में 11 फैक्ट्रियों पर से मजदूरों ने कम्पनियों के कब्जे हटाये। इसने रंगत ही बदल दी है। जान-पहचान जहाँ झमेले लिये है वहाँ अनजाने भी अपने हैं का विचार-व्यवहार खूब कमाल करेगा।

अलाइड निप्पोन लिमिटेड, प्लॉट 440 सैक्टर-8 आई.एम.टी. मानेसर स्थित फैक्ट्री जापान में मुख्यालय वाले **हिताची समूह** की जापान ब्रेक इन्डस्ट्रीज और भारत में मुख्यालय वाले **तलवार समूह** का संयुक्त उद्यम है। यह फैक्ट्री साहिबाबाद से 2010 में आई.एम.टी. आई है। अलाइड निप्पोन फैक्ट्रियों में **होण्डा, हीरो, बजाज, पियाजिओ, यामाहा** दुपहियों और **सुजुकी, बॉश, टाटा, होण्डा** कारों आदि के ओरिजिनल हिस्से-पुर्जे बनते हैं। अलाइड निप्पोन की आई.एम.टी. स्थित फैक्ट्री में वाहनों के ब्रेक शू बनते हैं और यहाँ 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में 300 मजदूर काम करते हैं। एक भी मजदूर स्थाई नहीं है, चार ठेकेदारों के जरिये 300 मजदूर रखे हैं। फैक्ट्री में सिर्फ स्टाफ स्थाई है। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। ई.एस.आई. व पी.एफ. की राशि सब मजदूरों की तनखा से काटते हैं पर 70 प्रतिशत को ई.एस.आई. कार्ड नहीं। एक्सीडेन्ट होते रहते हैं पर एक्सीडेन्ट रिपोर्ट नहीं भरते। नर्सिंग होम में भेज देते हैं, मजदूर अपने खर्च पर उपचार करवाये। अधिक चोट लगने पर नौकरी से निकाल देते हैं – मोल्डिंग विभाग में एक मजदूर की तीन उँगली कटी, एक्सीडेन्ट रिपोर्ट नहीं भरी, प्रायवेट में इलाज करवा कर नौकरी से निकाल दिया।

---

*पैसे बढाने के बाद मारुति सुजुकी फैक्ट्री में ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों में आई.टी.आई. वालों को प्रतिदिन 238 रुपये 38 पैसे दिहाड़ी, 75 रुपये उपस्थिति भत्ता, 4 रुपये वर्दी धुलाई भत्ता, 19 रुपये 62 पैसे मेडिकल भत्ता, 19 रुपये 62 पैसे आवागमन भत्ता, यानी, एक दिन काम के 356 रुपये 62 पैसे। और बिना आई.टी.आई. वालों को प्रतिदिन 182 रुपये 69 पैसे दिहाड़ी, 75 रुपये उपस्थिति भत्ता, 4 रुपये वर्दी धुलाई भत्ता, 9 रुपये 62 पैसे मेडिकल भत्ता, 9 रुपये 62 पैसे आवागमन भत्ता, यानी, एक दिन काम के 280 रुपये 93 पैसे। त्यौहारी छुट्टी पर भत्तों के पैसे नहीं, मात्र दिहाड़ी ही। अब तीन महीने में दो छुट्टी ले सकते हैं और साप्ताहिक अवकाश के साथ भी छुट्टी ले सकते हैं। पहले ऐसी एक छुट्टी थी और वह भी सुपरवाइजर अनुमति दे तब – वह अनुमति नहीं देते थे। पहले 40 प्रतिशत (बाकी पेज तीन पर)

अनुभव

सीनियर फ्लैक्सोनिक्स

सीनियर फ्लैक्सोनिक्स मजदूर : "प्लॉट 89 सैक्टर-8 आई.एम.टी. मानेसर स्थित फैक्ट्री में जे सी बी, टाटा, अशोक लेलैण्ड वाहनों के साइलैन्सर में लगते फ्लैक्स और स्थानीय प्रयोग तथा निर्यात के लिये वाहनों के हॉज पाइप बनते हैं। सुबह 6 बजे शिफ्ट आरम्भ होती है, 5.55 पर हूटर – दो मिनट देरी पर गेट रोकना। भोजन अवकाश 12 बजे जा कर, 30 की बजाय 25 मिनट का। तीन शिफ्ट 8-8 घण्टे की थी, जून 2011 से 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट। ओवर टाइम पर जबरन रोकना, गेट पर फोन करना – इसे जाने मत दो। जनरल मैनेजर की भाषा : उलटा लटका दूँगा, पैन्ट उतार दूँगा। पावर प्रेसों पर हाथ कटने पर एक्सीडेन्ट रिपोर्ट नहीं भरना, फिर निकाल देना. मजदूर स्वयं अपना उपचार करवायें – तीस प्रतिशत के पास ई.एस.आई. कार्ड नहीं। फैक्ट्री में 67 स्थाई मजदूर, 40 कैजुअल वरकर और तीन ठेकेदारों के जरिये रखे 200 मजदूर। दस वर्ष से लगातार काम कर रहे मजदूर भी अस्थाई। उद्योग विहार, गुड़गाँव से 20 फरवरी 2009 को फैक्ट्री यहाँ आई.एम.टी. में लाई गई। ट्रान्सफर के समय कम्पनी ने कहा था कि अस्थाई मजदूरों को स्थाई कर देंगे और आने-जाने के लिये बस लगायेंगे। न बस के दर्शन हुये और न ही टेम्परेरी को परमानेन्ट किया। बल्कि, स्थाई मजदूरों को वर्दी का धुलाई भत्ता देना बन्द कर दिया, एल टी ए देना बन्द कर दिया, इन्सेन्टिव बन्द कर दिया। स्थाई मजदूरों की भी तनखा कम – 15 वर्ष से स्थाई की तनखा मात्र 6340 रुपये और एच आर ए के 1340 रुपये। कैजुअल तथा ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों को बोनस न पहले देते थे और न अब देते हैं। पैसों की बहुत जरूरत होने पर भी अस्थाई मजदूरों को एडवान्स नहीं। हाँ, सब मजदूरों को ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर से, पर गड़बड़ी कर ठेकेदार हर महीने ओवर टाइम के पैसों में से 400-500 रुपये खा जाते। कम्पनी ने 1 से 30 की जगह 25 से 25 का महीना कर तनखा में देरी करनी शुरू की – कुछ तय नहीं कि कब देंगे। ऐसे में स्थाई मजदूरों ने यूनियन पंजीकरण की प्रक्रिया आरम्भ की। सरकार से पंजीकरण 23 दिसम्बर को प्राप्त हुआ जबकि कम्पनी को माँग-पत्र अगस्त में ही दे दिया था और श्रम विभाग में दो-तीन बार मैनेजमेन्ट समझौता वार्ता के लिये पहुँची, पर दिसम्बर से आना बन्द कर दिया। माँग-पत्र में स्थाई मजदूरों की तनखा बढाने की माँग के संग वर्षों से काम कर रहे अस्थाई को स्थाई करने, बस का प्रबन्ध, कैन्टीन में पर्याप्त भोजन आदि माँगें थी। रविवार, 8 जनवरी के साप्ताहिक अवकाश के बाद 9 को सुबह ड्युटी के लिये पहुँचे तो फैक्ट्री गेट पर ताला लगा था। पूछने पर बोले कि पहले शर्तों पर हस्ताक्षर करो, फिर अन्दर जाओ। किसी मजदूर ने हस्ताक्षर नहीं किये, 150 लोग गेट के बाहर बैठ गये। बी-शिफ्ट के भी किसी मजदूर ने शर्तों पर हस्ताक्षर नहीं किये। गेट के बाहर 300 मजदूर। श्रम विभाग गये। कम्पनी (बाकी पेज तीन पर)

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे0 के0 आफसैट दिल्ली से मुद्रित किया।

RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73/12-14